वाल्मीकि रामायण में वर्णित दूतों के कर्त्तव्य

–डॉ. महेन्द्र कुमार उपाध्याय
एसोशिएट प्रोफेसर
इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
ज.रा.दि. विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ0प्र0)

सारांश

वाल्मीकि एवं उनकी कृति 'रामायण' (आदि महाकाव्य) का काल सुनिश्चित करना विद्वानों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। विविध मतमतान्तरों के मध्य एक आम धारणा है कि महर्षि वाल्मीकि का काल उत्तर वैदिक काल (1000–600ई0पू0) एवं रामायण का रचनाकाल पाणिनि से पूर्व (500ई0पू0) निर्धारित करना समीचीन प्रतीत होता है।

भारत में दूत व्यवस्था अति प्राचीन है। संभवतः लोक में राज्य व्यवस्था के निर्माण के साथ ही दूत की आवश्यकता का अनुभव किया गया होगा। सभी राजशास्त्रियों ने राजा के कर्त्तव्य पालन हेतु दूत की उपयोगिता का कथन किया है। 'दूत' राज्य का एक आवश्यक अंग समझा जाता था। दूत का शारीरिक संगठन चाहे जैसा भी हो उसे तो केवल 'दौत्यकर्म' मे निपुण होना चाहिए।

मुख्य शब्द–शास्त्रज्ञ, शुभाशुभ, धर्मज्ञ, अवध्य, तन्द्राहीन, दिग्विजय, दौत्य, संदेशवाहक।

प्राचीन भारत में राज्य के सुसंचालन हेतु 'दूत' की व्यवस्था स्वीकार की गयी थी। सभी राजशास्त्रियों ने दूत को राजा का 'मुख' बतलाया है। रामायण में दूतों का पर्याप्त उल्लेख मिलता है। 'दूत' राज्य का एक आवश्यक अंग समझा जाता था। उसका कर्म 'दौत्य' कहलाता था।

दूत का प्रधान कर्म अपने राजा का संदेश दूसरे राजा तक पहुंचाना था। राजाओं के परस्पर वार्तालाप के आदान–प्रदान का साधन दूत ही होता था। विवाह के अवसर पर महाराज जनक अपने दूतों द्वारा महाराज दशरथ के पास यह संदेश भेजते हैं कि ''आपके पुत्र राम अतिशय पराक्रम एवं अतुलनीय बलयुक्त है, अतः मैं अपनी कन्या सीता का विवाह राम के साथ करना चाहता हूँ।[1] महाराज के इस संदेश को लेकर दूत अयोध्या नगरी जाते हैं और दशरथ को कह सुनाते हैं।[2]

हनुमान भी लंका जाकर सीता का अन्वेषण करते हैं और बाद में बन्दी बनाये जाने पर रावण की सभा में जाकर सुग्रीव का संदेश रावण को कह सुनाते हैं और साथ ही सीता को लौटा देने की प्रार्थना भी करते हैं।[3] दिग्विजय करने के पश्चात् जब रावण लंका पहुंचता है तो यक्षाधिपति कुबेर के पास 'दूत' द्वारा संदेश भेजता है यह 'पुरी राक्षसों की है अतः उसे आप हम लोगों को लौटा दें।'[4]

दूत–शास्त्रज्ञ, विद्वान और अतिबुद्विमान होता था, अतएव वह अपने राजा के संदेश कथन के पश्चात दूसरे राजा को शुभाशुभ उचितानुचित कार्यों का उपदेश भी देता था और असिद्ध कार्य को किसी भी प्रकार बनाने का प्रयत्न करता था। जिससे देश में युद्ध अथवा रक्तपात आदि न होने पावे। हनुमान लंका में रावण की सभा में उपस्थित होकर उन्हें समझाते

हुए कहते हैं– हे बुद्धिमान! आप धर्म के ज्ञाता और तपस्वी हैं। हे धर्मज्ञ! दूसरे की स्त्री का हरण करके रोक रखना आपके लिए उचित नहीं है। आप सदृश बुद्धिमान लोग अपने को समूल नष्ट करने वाले अनेक अनर्थों की जड़ रूप और धर्म विरुद्ध कार्य नहीं किया करते। हे राक्षसराज! रामचन्द्र से विरोध करके तीनों लोक में कोई सुखी नहीं रह सकता। अतः आप मेरे त्रिकाल में कल्याणकारी वचन मानकर सीता को रामचन्द्र को लौटा दें। आपने तपस्या करके जो दीर्घायु और प्रचुर ऐश्वर्य प्राप्त किया है, उसे पर–स्त्री हरण के पाप से नष्ट न कीजिए। धर्म से सुख और अधर्म से दुख मिलता है। आपने जो धर्म कार्य किया, उसका फल आपको मिल चुका है। अब पर–स्त्री हरण के पाप का फल भी शीघ्र आपको मिलेगा। हे धर्मज्ञ! आप जनस्थान के राक्षसों का वध, बालि का संहार, सुग्रीव और राम की मित्रता आदि सब बातों का विचार कर अपने हित का उपाय कीजिए।[5]

दूत का यह आवश्यक कर्त्तव्य था कि वह राजा की प्रत्येक आज्ञा का पालन करे। चाहे वह आज्ञा उचित हो या अनुचित। अतः आलस्यरहित तन्द्राहीन दूत, प्रत्येक समय राजाज्ञा का पालन करने के लिए तत्पर रहता था। सुग्रीव अपने दूतों को राम की पत्नी सीता के अन्वेषण के लिए चारों दिशाओं में स्थित वानरों को बुलाने के लिए भेजता है।[6] उनकी दूत आज्ञा का पालन करते हुए दूत शीघ्र जाकर महाराज का सन्देश वानरों को सुनाकर, उन्हें सम्मानपूर्वक नगरी में ले आते हैं।[7] इसी प्रकार महाराज दशरथ की मृत्यु हो जाने पर मंत्रियों की आज्ञा से दूत शीघ्र केकय प्रदेश पहुंचते हैं और भरत को संदेश सुनाकर उन्हें अयोध्या ले आते हैं।[8]

प्राचीन काल में दूत 'अवध्य' माना गया है। दूत तो संदेशवाहक होता है। उसका सन्देश चाहे तीक्ष्ण हो या शुभकर, किन्तु उसकावध किसी भी परिस्थिति में शास्त्र गर्हित था। रामायण युग में भी यही मान्यता स्वीकृत थी। हनुमान के कुकर्मों से रुष्ट रावण क्रोधवश उन्हें मारने की आज्ञा देता है, इस पर विभीषण उसे समझाते हुए कहते हैं– वीर! वानर का वध करना धर्म विरुद्ध, लोक व्यवहार निन्दित और तुम्हारे अयोग्य है। इस शत्रु ने यद्यपि बहुत बड़ा अप्रिय कार्य किया है, सत्पुरुष दूतों के वध की सम्मति नहीं देते। अच्छा हो या बुरा, वह तो दूसरे का संदेशवाहक होता है। अतएव पराधीन दूत का वध किसी भी स्थिति में नहीं करना चाहिए।[9]

क्रोधवश शत्रु के दूत का वध करने के उल्लेख रामायण के अन्य स्थलों पर प्राप्त होते हैं। विभीषण को राम के पास आया हुआ देखकर लक्ष्मण अत्यन्त क्रुद्ध होते हैं और उसक वध करने के लिए उत्साहित करते हुए राम से कहते हैं– यह रावण का छोटा भाई चार राक्षसों के साथ आपकी शरण में आया है। रावण ने उसे अपना दूत बनाकर भेजा है। यह छिपकर आपका विश्वासी बनकर आप पर प्रहार करना चाहता है। अतः इसे कठोर दण्ड देकर मार डालना चाहिए किन्तु राम–लक्ष्मण के इस कथन का खण्डन करते हैं और विभीषण का स्वागत कर शरण प्रदान करते हैं।

इस प्रकार निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि दूत का प्रधान कर्त्तव्य अपने राजा का संदेश दूसरे राजा तक पहुंचाने के साथ ही साथ शुभाशुभ–उचितानुचित कार्यों का उपदेश, असिद्ध कार्य को सिद्ध बनाना तथा राजाज्ञा का पालन करना था। बाल्मीकि रामायण में वर्णित दूतों में राजा जनक के दूत, हनुमान और विभीषण विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सन्दर्भ–

1. अर्थशास्त्र, 16.16.1
2. वाल्मीकि रामायण, 1.67, 24–27
   'भवतोऽनुमते ब्रह्मंशीघ्रं गच्छन्तु मंत्रिणः।
   मम कौशिक भद्रं ते अयोध्यां त्वरिता रथै'।। 24
   'राजानं प्रश्रितैर्वाक्यैरानयन्तु पुरं मम।
   प्रदानं वीर्यशुल्कायाः कथयन्तु च सर्वशः'। 25
   'मुनिगुप्तौ च काकुत्स्थौ कथयन्तु नृपाय तै।
   प्रीतियुक्तं तु राजानमानयन्तु सुशीघ्रगा।।' 26
   'कौशिकस्तु तथेत्याह राजा वाभाष्य मन्त्रिण।
   अयोध्यां प्रेषयामास धर्मात्मा कृत शासनान्।' 27
   यथावृतं समाख्यातुमानेतुं च नृपे तथा।
3. भ्रातुः शृणु समादेयं सुग्रीवस्य महात्मनः। वा.रा., 5.49 पूरा सर्ग।
4. वा.रा., 7.11.23, 24।
5. वा.रा., 5.49.16–29।
6. प्रेषिताः प्रथमं ये च मया दूता महाजनाः। त्वरणार्यं तु भूयस्त्वं हरीन्संप्रेषयापरान्। वा0रा0, 4।
7. वा.रा., 1.69.6।
8. वा.रा., 2.64.3।
9. वा.रा., 5.46.44, 5.50.5, 6, 11–15।